BKR-29

उद्धव-लीला

दो०: ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द.
ब्रज बनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचंद.

श्री ब्रजराज कुमार वर गाइये, आनंद की निधि वर गाइये, भक्तन कौमन मामतौ गाइये, लाड़िली ललन वर गाइये, परम दयालु श्री गुरुवे नमः

आरती (समूह-गान)

जय ब्रजनंदन, कंस निकंदन, गजमद भंजन नमो नमो.
जय सिवधनु खंडन, देवकीनंदन, मुनि मन रंजन नमो नमो.
जय मुष्टक चारुन विनासक, गौ द्विज पालक नमो नमो.
जय घनस्याम "राम" ब्रजनायक दुष्ट विदारक नमो नमो.

सब: बोलो कंस निकंदन, नन्दनंदन भगवान श्रीकृष्णचंद की जय.

समाज: सो०: नंदनदन यदुराज, मारकंस मथुरा बसे.
करत राज के काज, पै मन ब्रज में ही रम्यौ.

छप्पय: मथुरा की संपति सुख वैभव प्रभुहिं न भावै.
ब्रजवासिन की याद हिये नित शूल चुभावै.
मातु देवकी षट्रस व्यंजन भोग लगावै.
पै जसुदा मैया कौ माखन हरि हि बुलावै.
जमुना केलि कछार की, याद रास रस की करैं.
गौ गायन की सुरति कर, नैंनन जल जदुपति भरैं.
नित सोचैं ब्रज चलूं पड़ी पर स्वर्ण श्रृंखला.
ब्रजनंदन की हरैं नींद निसि ब्रज की अबला.
यौं चिंतित यदुनाथ, एक दिन जमुना आये.
उद्धव सखा समेत परम पावन जल न्हाये.
तहँ जल में बहतौ कमल, लीनौं स्याम उठाय.
वास-वासना सौं लियौ, नासा निकट लगाय.
सूंघ कमल में राधिका गंध स्याम विह्वल भये.
डग डगमग तन सिथिल अति उद्धव लै हरि कौं गये.

(तोते द्वारा राधा राधा बोल जाना)

कृष्ण : राधे श्री राधे, मेरी प्राणजीवनधन वृषभानुनंदिनी तुम कहाँ हौ.

उद्धव: मथुराधीस, जमुना स्नान करते करते अधमुरझाये कमल कूं सूंघते ही आपकी ये कहा दसा है गई है!

कृष्ण : मैया उद्धव, जमुना में बहतौ भयौ ये कुम्हलायौ भयौ कमल निश्चय ही श्री किसोरीजी कौ प्रसादी है. वा कमल कू स्वयं सूंघ के श्री किसोरीजू ने जमुना में प्रवाहित कियौ है. आहा हा. या कमल में बसी श्री वृषभानु जकये सुरभित स्नेह की गंध ने ही मोय बेसुध कर दियौ है. उनकी वियोग में व्यथित स्यामाजू के उच्छाव की ताप सों ही यह कमल आधौ मुरझाय गयौ है. मेरे वियोग में ब्रज की जो दसा है रही है वा व्यथा की कथा मोय या कमल ने अपनी सुगंध ते सुनाय दयी है.

उद्धव: नन्दनंदन! आप धीरज धारन करौ. आपकी ये विह्वलता और नयनन ते झर झर झरती भई आंसून की ये धार मोपै देखी नहीं जाये है.

कृष्ण : मैया उद्धव मैं कैसे धीरज धरूं? मथुरा कौ ये राज-काज मेरे ब्रज के प्रेम राज्य कू उजाड़े दै रह्यौ है. ब्रजवासीन कौ लाड़ दुलार और अनुराग मोय बुलाय रह्यौ है. ~~नंद औ~~

नंद औ जसोमति के प्रेम पगे पालन की,
लाड़ भरे लालन की लालच जगावती.
कहै रतनाकर सुधाकर प्रभासों मढ़ी,
मंजु मृग नैनिन के गुन गन गावती.
जमुना कछारन की रंग रस रारनि की,
विपिन विहारन की हौंस हूं हुमसावती.
सुधि ब्रजवासिन दिवैया सुख रासिन की,
उधौ नित हमकों बुलावन कौं आवती.

भैया उद्धव. मैं तोसों वा ब्रज के सुख को कहा बर्नन करूं. मैं चेष्टा करि करि के थक गयौ पर वा आनंद की याद भुलाये ते हू नहीं भूले है -

गोकुल की गैल गैल गैल गैल ग्वालिन की,
गोरस के काज लाज बसकै बहाइवौ.
कहै रतनाकर रिझायवौ नवेलिन कौ,
गाइवौ गवाइवौ औ नाचिवौ नचाइवौ.
कीबौ स्रमहार मनुहार के विविध विधि,
मोहिनी मृदुल मंजु बांसुरी बजाइवौ.
ऊधौ सुख संपति समाज ब्रजमंडल के,
भूले हूं न भूलैं/ हमकौं भुलाइवौ.

उद्धव: हे मथुराधीस,आप तौ परम योगी और ज्ञानीन में सिरोमनि हौ. या नस्वर संसार में व्याप्त पंचभूत के पसारे कौ मर्म आप जानौ हौ,फिर हू या प्रकार अधीर होनौ आपकू सोभा नहीं देय है. प्रभो आप सबमें रमे भये हौ,आत्मानंद हौ,सब आत्मान में आपकी ही स्थिति है फिर आपके हृदय में ये संयोग और वियोग कौ भाव कैसो -

पांचौ तत्व मांहि एकतत्व ही की सत्ता सत्य,
याही तत्व ज्ञान कौ महत्व श्रुति गायौ है.
तुमतौ विवेक रत्नाकर,कहौ क्यौं पुनि,
भेद पंच भौतिक के रूप में रचायौ है.
गोपिन में आपमें वियोग और संजोग हू में,
एकै भाव चाहिए सचोप ठहरायौ है.
आपु ही सौं आपकौ मिलाप औ बिछोह कहा,
मोह यह मिथ्या सुख दुख सब ठायौ है.

कृष्ण : उद्धव तुम ठीक कहि रहे औ के के जीव एक ही अंशी के अंस हैं और ये समस्त संसार ही सुख दुख मय है, यासों वियोग और मिलाप हू एक भ्रम ही है, पर भैया उद्धव ज्ञान कौ ये दर्सन प्रेम राज्य के भावुक निवासिन के हृदय में नहीं उतर सकै है. तुम तुम एक बेर ब्रजयात्रा करि आऔ अपने ये उपदेस ब्रजवासी और ब्रजबालान कू दै के उनके हृदय में उतारि आऔ तौ मैं हू तुम्हारे उपदेस कौ महत्व मान लुंगौ और या प्रेम के नेम कू हृदय ते निकास दउंगौ -

प्रेम नेम निफल निकास निज अंतर तें,

ब्रह्म ज्ञान आनंदनिधान भरि लैहैं हम.

कहै रत्नाकर सुधाकर मुखीनध्यान,

आंसुन सौं धोइ जोति जरि लैहैं हम.

आवौ एक बार धार गोकुल गली की धूर,

तब एहि नीति की प्रतीति कर लैहैं हम.

मन सौं करजे सौं, स्रवन सिर आंखिन सौं,

उद्धव तिहारी सीख भीख कर लैहैं हम.

उद्धवः हे स्नेह सिरोमणि, यदि आपकी ऐसी इच्छा है तौ मैं अवस्य ही ब्रज जायकै आपके सखा और सखी परिकर कू समझायवे की चेष्टा करुंगौ. आप धीरज धरैं. आप या समस्त वैभवन सौं भरी मथुरा नगरी कू अनाथ करिवे कौ विचार न करैं. हे ब्रजेश! आप अपने महाराजाधिराज के गौरव कौ हू अब ध्यान राखौ बिना आपके ये मथुरा राज्य अनाथ है जायगौ. यहां आपकौं सब प्रकार के सुख साधन प्राप्त हैं, जो ब्रज में नहीं हैं. माता देवकी कैसे षट्रस भोजनन सौं आपकौ भोग लगावैं हैं.

कृष्ण : अरे भैया उद्धव तुम ठीक कहौ हौ पर ये षट्रस व्यंजन और वैभव तनिक हू रुचिकर न है के बंधन स्वरुप लगे हैं. मैं तुमते सांची कहूं हू कै मेरै ब्रज के मोर के पखउआन के मुकुट पै मेरौ मन मथुरा

के ये रत्न-जटित कीट कू न्यौछावर कर देनों चाहे है-

मोरन के पाखन कौ मुकुट छबीलो छाँड़ि,

कीट मनि मंडित धराय करि हैं कहा.

कहे रतनाकर त्यौं माखन सनेही बिनु,

षटरस व्यंजन चबाइ करिहैं कहा.

गोपी ग्वाल बालनि कौ झौंकि विरहानल में,

हरिसुर वृंद की बलाय करि हैं कहा.

प्यारो नाम गुपाल कौ विहाइ हाय,

ठाकुर त्रिलोक के कहाय करिहैं कहा.

या सों मेरे प्यारे सखा तुम वेगि ही ब्रज कू गमन करो-

ऊधौ ब्रज कौं गवन करो.

हमहि बिना गोपिका विरहनी, तिनके दुःख हरो.

जोग ज्ञान परबोध सबन कौं, ज्यों सुख पावें नारि.

पूरन ब्रह्म अक्ल परिचय करि, डारें मोहि विसारि.

सखा प्रवीन हमारे तुम हौ, तुम से नहीं महंत.

सूरस्याम इहि कारन पठवत ह्वै आवैगो संत.

उद्धव: जो आज्ञा ब्रजेस. मैं ब्रज जाय के जोग को उपदेस दैकै सब ब्रजवासिन की सोक हरन करवे की चेष्टा करूं हूं. या सों आपको हू चित्त शांत होय.

कृष्ण: (रुंधे गले से) ठीक है सखा आप मेरे रथ में विराजो और ब्रज कू प्रस्थान करके सब ब्रजवासिन कू धीरज बधाओ.

समाज: उद्धव के चलत गुपाल उर मांहि चल,

आतुरी मची सो परे कहिनै कबीन सों.

कहे रतनाकर हियो हू चलिवे को संग,

लाख अभिलाष लै उमडि विकलीन सों.

आन हिचकी ह्वै गरे बीच सरक्यौई परे,

आनन दुआर तैं उसास ह्वै बढ़चौईपरे,

आँसु ह्वै कढ़यौई परे नैन खिरकीन सौं.

(घोड़ों की टाप के साथ रथ चलना व संगीत का उभरना)

उद्धव : हूँ (स्वकथन) जैसें जैसें मेरो रथ ब्रज की सीमा में प्रवेश कर रह्यौ है यहाँ की राग भरी प्रकृति और अनुराग के रंग में रंगी सीतल मंद पवन मेरे ज्ञान की गरिमा कू उड़ाय कै लैजाती सी प्रतीत है रही है. या प्रदेस के मोह वातावरण कौ यह कैसौ विचित्र अनुभव है.

समाज : दुख सुख ग्रीसम और सिसिर न व्यापै जिन्हैं,

छापै छाप एके हिये ब्रह्म ज्ञान सानि मैं.

कहे रतनाकर गंभीर सोई उद्धव कौ,

धीर उधरान्यौ आय ब्रज के सिवानि मैं.

औरै मुख रंग भयौ सिथलित अंग भयौ,

बैन दबि दंग भयौ गर गरुआनि मैं.

पुलकि पसीजि पास चाँपि मुरझानि काँपि,

जानै कौन बहत बयारि बरसानि मैं.

(रथ का आना गोपियों का देखना)

सखी १: अरी सखी देखतौ ये मथुरा की ओर सौं रथ कैसो चलौ आय रह्यौ है. या पै चन्द्रवंस की पताका फहराय रही है. सखी का ब्रज जीवन घनस्याम सुन्दर पधार रहे हैं.

सखी २: सखी ये रथ तौ नंद-भवन की ओर मुरकि गयौ. या तौ स्वयं स्यामसुन्दर पधारे हैं या उनको कोई दूत आयौ है.

सखी ३: (आति दूर) अरी सखी आज प्यारे स्याम सुन्दर के प्रिय सखा उद्धव नंद-भवन में पधारे हैं. मैया जसोदा उन्हैं हृदय ते लगाय के अपने नैनन के जल सौं उन्हैं सत्कार रही हैं. सुनी है कै वे हम सबके ताँई वा निष्ठुर कन्हैया की कोई पत्रिका लाये हैं.

सखी ४: अरी वीर! तू प्यारे मनमोहन कू निष्ठुर मति कहै. वह तौ हमारे प्रान हैं. आज पत्रिका आई है तौ कल वे स्वयं हू अवश्य पधारैंगे. चलौ नंद भवन में चलिकैं देखैं तौ सही के प्यारे ने कहा पत्रिका भेजी है.

सब : चलौ सखी (गोपियों के समूह का नंदभवन में पहुंचना)

समाज : भेजे मनमोहन के उद्धव के आवन की,

सुधि ब्रजगोपिन, मैं पावन जबै लगीं.

कहै रतनाकर गुवालिन की झौरि झौरि,

दौरि दौरि नंद पौरि आवन तबै लगीं.

उझकि उझकि पद-कंजन के पंजन पै,

देखि देखि पाती छाती छोहिन सबै लगीं.

समूह : हमकौ लिखौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा कहन सबै लगीं.

सखीसमूह: उद्धव जी! आप वेगि ही हमें प्रानप्यारे की पत्रिका सुनाऔ. उनने हमकू कहा लिख्यौ है, उद्धव जी हमकू कहा सन्देस भेजौ है. किसोरी जी सौं कब मिलिवे की लिखी है.

उद्धव: देवी ब्रजांगनाओ. आप शांतिपूर्वक विराजौ. मथुराधीस ने आप सबनकू ही पालागन लिखी है. उनकौ संदेस मैं आपकूं बांच के सुनाऊँ हूं आप दत्तचित्त है के सान्तिपूर्वक स्रवन करौ. उनने लिख्यौ है कै -

पंचतत्व में जो सच्चिदानंद की सत्ता सो तौ,

हम तुम उनमें समान ही समोई है.

कहै रतनाकर विभूति पंचभूत हू की,

एक ही सी सकल विभूतिनि में पोई है.

माया के प्रपंच ही सौं भासत प्रभेद सबै,

कांच फलकनि ज्यौं अनेक एक सोई है.

देखौ भ्रम पटल उघार ज्ञान आंखिन सौं,

हे ब्रजांगनाओ! वे समस्त संसार में पंचतत्व कौ बनौ है. तुम तुम्हारे कन्हैया और मैं सभी पंचतत्व की ही विभूति हैं या सों ये समस्त चराचर एक ही हैं जो माया के भ्रम के कारन हमें पृथक पृथक दीखै है. या सों आप अपनी ज्ञान की अंखियन सों देखौ तो तुम्हें यह समस्त विश्व ही कृष्ण मय दीखवे लगैगौ. श्रीकृष्ण ही समस्त संसार हैं और ये समस्त संसार ही श्रीकृष्ण है. या सों आपकौ यह कृष्ण वियोग माया कौ एक भ्रम मात्र है. कृष्ण तौ सदैव सों ही घट घट वासी बने आपके हृदय में विराज रहे हैं-

सोई कान्ह सोई तुम सोई सबही हैं लखौ,
घट घट अंतर अनंत स्यामघन कौं.
कहे रतनाकर न भेद भावना सौं भरौ,
बारिध औ बूंद के विचारि बिछुरन कौं.
अविचल चाहत मिलाप तौ विलाप त्यागि,
जोग जुगतीकर जगाओ ज्ञानघन कौं.
जीव आत्मा कौं परमात्मा में लीन करौ,
छीन करौ तन कौंन दीन करौ मन कौं.

हे ब्रजदेवियो! जो श्रीकृष्ण हैं वुही तुम हौ, घट घट में एक ही बृह्म की सत्ता है या सों अपने मन में आप ज्ञान कौ प्रकास करिके भेद बुद्धि कौ त्यागन कर देउ. भला समुद्र के जल और बूंद में अन्तर कहा है जो समुद्र है वुही बूंद है. या सों जो तुम श्रीकृष्ण सों चिर मिलाप चाहौ तौ योग-साधना के द्वारा अपने ज्ञान कू जाग्रत करौ और अपनी आत्मा कू वा परमात्मा में लीन कर देउ. फिर सदा तुम उन्हें अपने हृदय में ही विराजमान पाओगी. गोपियो. आप मेरी बात मान के अपने मन कू दीन मत करौ और अपने या तन कू योग साधना में लीन कर देउ.

गोपी १: उद्धव जी! आप हमें प्यारे स्याम कौ संदेसौ देवे पधारे हौ या योग कौ संदेसौ लैके आये हौ. हम ब्रजबाला तौ एक

मनमोहन की ही उपासिका हैं. यह हृदय तौ एक मात्र स्याम सुन्दर कू ही अर्पित है अब यामें कोई दूसरौ मन मोहन नाय बस सकै है -

जाये हौ सिखावन कौं जोग मथुरा ते तौपै,
ऊधौ ये वियोग के वचन बतरावौ ना.
कहै रतनाकर दयाकरि दरस दीन्यौ,
दुख दरिबे कौं ताहि अधिक बढ़ावौ ना.
टूक टूक ह्वै है मन मुकुर हमारौ हाय,
चूकि हैं कठोर बैन पाहन चलावौ ना.
एक मनमोहन तौ बसि कै उजार्यौ मोहि,
हिय में अनेक मनमोहन बसाऔ ना.

गोपी २: सखी तू ठीक कहै है. उद्धव जी आप मेरी बात सुनौं. हम योग व्रत संयम मूलिकै हू नाय करिंगी चौं कै -
जोग व्रत संजम के पींजरे परै कौ जब,
लाज कुल कानि प्रतिबंधहि निवार चुकीं.
कौन गुन गौरव को लंगर लगावै जब,
सुधि बुधि ही को भार टेक करि टारि चुकी.
जोग रतनाकर में सांस घूंटि बूड़ै कौन,
ऊधौ हम सूधौ यह बानिक विचारि चुकीं.
मुक्ति मुक्ता कौ मोल माल ही कहा है, जब-
मोहन लला पै मन मानिक ही वार चुकीं.

सखी ३: हे उद्धव जी! आपकौ निर्गुन ब्रह्म हमारे काहू काम कौ नहीं है. हमें तौ आप हमारे स्याम सुन्दर सौं ही मिलाय देउ हम या निर्गुन ब्रह्म कौ कहा करिंगी-
कर बिन कैसें गाय दुहिहै हमारी वह,
पद बिनु कैसें नाचि थिरकि रिझाइ है.

कहै रतनाकर बदन बिनु कैसें चाखि,
मासन बजाइ बेनु गोधन गवाइ है.
देखि सुन कैसें दृग श्रवन बिनाही हाय,
मैंरे ब्रजवासिन की विपति बराइ है.
राखरी अनूप कोउ अलख अरूप ब्रह्म,
ऊधौ कहौ कौन धौं हमारे काम आइ है.

सखी ४: उद्धव जी! हम आपसों वृयर्थ कौ विवाद और बात कौ बबंडर बनानों नहीं चाहैं. आप हमारो सूधौ और सपाट उत्तर सुन लेउं -

जोग कौ रमावै औ समाधि कौ जगावै यहां,
दुख सुख साधन सौं निपट निबेरी हैं.
कहै रतनाकर न जानें क्यौं दूतै धौं आइ,
सांसनि की सासना की बासना बखेरी हैं.
हम जमराज की धराबत जमानि कछू,
सुरपति संपत्ति की चाहत न ढेरी हैं.
चेरी हैं न ऊधौ काहू ब्रह्म के बबा की हम,
सूधौ कहे देति एक कान्ह की कमेरी हैं.

गोपी २: उद्धव जी! हमें तौ ऐसो लगै है के आप स्यामसुन्दर की पत्रिका नहीं लाये वरन हमारे वियोग के घावन पै लौन लगायवे पधारे हौ. भला हम दुखियारीन कूं और सताय के तुम्हें कहा मिलेगी. उद्धव! सब नष्ट है जायँगे पर तुम्हारी ये अटपटी बात हमारे ब्रज के इतिहास में सदा कूं लिख जान्गी-

जोगिन की भोगिन की विकल वियोगिन की,
जग में न जागती जमातें रहि जाइंगी.
कहै रतनाकर न सुख के रहे जो दिन,
तौ ये दुख द्वंद की न रातें रहि जाइंगी.

प्रेम नेम छाँड़ि ज्ञान छेम जो बतावत सो,

मीति ही नहीं तौ कहा आतें रहि जाइंगी.

घातें रहि जाइंगी न स्याम की कृपा ते कछू,

उधौ कहिवे कौ बस बातें रहि जाइंगी.

सखी१: अरी सखी! तू वृथा ही इनते विवाद कर रही है. उद्धव जी!
मैं भली प्रकार आपकी चतुराई समझ गई. आप अपने संग कन्हैया
की पत्रिका नहीं लाये हौ. ये सबरी कविता जो आप सुनाय
रहे हौ ये तौ हमारी वा सौत कूबरी ने आपकू दई हैं-

सुनी गुनी समझी तिहारी चतुराई जिती,

कान्ह की पठाई कविताई कूबरी की है.

कहै रतनाकर त्रिकाल में त्रिलोक हू में,

आनै आन नैकुना त्रिदेव की कही की हैं.

करिहैं प्रतीति प्रीत नीति हू त्रिबाचा बाँधि,

ऊधौ साँच मन की हिये की अरजी की है.

वे तौ हैं हमारे, हमारे ही हमारे और, हम —

उनही की उनही की उनही की हैं.

उद्धव: हे ब्रजदेवियो! आप मेरो विश्वास करो. वह आपके हैं और
आप उनकी हैं यह मान के मैंने आपकू आपके प्रियतम की
स्यामसुन्दर कौ ही संदेस सुनायौ है.

गोपी३: उद्धव जी! जो यह हमारे प्यारे कौ ही संदेसौ है तौ का
उन निर्दयी कू ऐसी पत्रिका भेजवे में नेकु हू लज्जा नहीं आई
और आप हू उनके संगी बनके हम मरी मराइन कू मार रहे हौ-

प्रथम मुराइ प्रेम पाठ न पढ़ाइन उन,

तन मन कीन्हे विरहानल पिला हैं.

कहै रतनाकर त्यौं आप अब तापि आइ,

साँसन की साँसति के झारत झमेला हैं.

ऐसे ऐसे सुभ उपदेस के दिवैयन की,
उधौ ब्रजदेस में अपेल रैल रैला है.
वे तौ भये जोगी जाइ पाइ कूबरी कौ जोग,
आप कहें उनके गुरु हैं किधौं चेला हैं.

गोपी ४: उद्धव वे कन्हैया बड़े ही निठुर हैं--

सुधि बुधि जाति उड़ी, जिनकी उसासनि सौं,
तिनकौं पठायौ कहा धीर धरि पाती पर.
कहै रतनाकर त्यौं विरह बलाय ठाइ,
मुहर लगाय गये सुख थिर थाती पर.
और जो कियौ सो कियौ उधौ पै न कोऊ कियौ,
ऐसी घात घनी करै जनम संघाती पर.
कूबरी की पीठ तैं उतारि मार भारी तुम्हैं,
भेजो ताहि थापन हमारी छीन छाती पर.

गोपी १: उद्धव! अब आप अपने उपदेस कू अपने ही संग राखौ, ब्रज में याकौ कोई ग्राहक नायें. उद्धव तुम स्याम के नहीं निश्चै ही वा सौत कुब्जा के भेजे भये यहाँ आये हौ.

सुघर सलौने स्यामसुन्दर सुजान कान्ह,
करुनानिधान के बसीठ बनि आये हौ.
प्रेम पनधारी गिरधारी कौ सनेसौ नाहिं,
होत है अंदेस झूंठ बोलत बनाये हौ.
ज्ञान गुन गौरव गुमान भरे फूले फिरौ,
वंचक के काज पै न रंचक बराये हौ.
रसिक सिरोमनि कौ नाम बदनाम करौ,
मेरे जान उधौ कूर कूबरी पठाये हौ.

उद्धव : अहाहा! इन ब्रजदेविन के निच्छल प्रेम और सहज उपालंभन सों मेरे योग और ज्ञान कौ गढ़ ढह गयौ. श्रीकृष्ण कौ साक्षात प्रेम ही मानौं इन गोपिन के रूप में प्रगट है गयौ है. इनके प्रेम की तुलना में मेरौ यह ज्ञान अत्यंत तुच्छ है. इनकौ ये श्रीकृष्णप्रेम धन्य है -

धन्य धन्य ये लोग ~~बसत~~ भजत हरि कौं जो ऐसे.
और कोउ बिन रसहि प्रेम पावत है कैसे.
मेरे वा लघु ज्ञान कौ, उर में मद होइ वृयाधि.
अब जान्यौ ब्रज प्रेम की लहत न आधौ आधि.
वृथा श्रम करि मरौ.

हे ब्रजांगनाओ! आप तौ प्रेम की ध्वजा हौ. आपके प्रेम की तुलना में मेरौ ज्ञान वृथर्थ है. आप मोय छमा करौ. मेरी तौ यही इच्छा है रही है के आप मोय हू या ब्रज में की गुल्म ~~या~~ लता अथवा बेलि बनाय लेउ तौ आति जाति आपकी परछाईं के स्पर्श सों ही मेरौ उद्धार है जाइगौ. मैं मथुरा आयके अब ब्रजेन्द्रनन्दन सों यही बरदान मागूंगौ -

ह्वै के रहौं द्रुम गुल्म लता बेली बन माही।
आवत जात सुभाय परै मोपै परछाई।।
सोऊ मेरे बस नहीं, जो कछु करौं उपाय।
मोहन होहि प्रसन्न तौ ये बर मागूं जाय।।
कृपा करि देहिं जो.

गोपी २: हे उद्धव जी! यदि आप मथुरा पधार रहे हो तौ हमारे स्याम सुन्दर सों इतनी बिनती अवस्य कर दीजो के एक बार पधार के हम अबलान कौं अपने दर्सन अवस्य दे जायँ.

उद्धव: हे ब्रजदेवियो! मैं मथुराधीस सों अवश्य ही आपको संदेस कहूंगो और उनसों अवश्य ही ब्रज पधारिवे की प्रार्थना करूंगो. आप जो बतामैं मैं उनसों वही संदेस कहूं.

गोपी ३: हे उद्धव जी! जब प्यारे मन मोहन आपसों ब्रज के समाचार पूछें तो आप उनसे कहियो के -

हाल कहा बूझत बिहाल परीं बाल सबै,
बस दिन द्वैव देखि नैंनन सिराइयो.
रोग यह कठिन न ऊधौ कहिवे के जोग,
सूधौ सो संदेसो याहि तू न ठहराइयो.
औसर मिले पै सरताज जब पूछहिं तो,
कहियो कछू न दसा देखी सो दिखाइयो.
आह के कराहि नैंननीर अवगाहि,
कछू कहिवे की चाह हिचकी लै रहि जइयो.

गोपी १: हे उद्धव जी! आप प्यारे स्याम सुन्दर सों हमारे या अपार दुख की कछु चर्चा मति करियो अन्यथा उनको कोमल हृदय बड़ो कष्ट पावैगो.

नंद जसुदा औ ग्वाल गोप गोपिका की,
बात वृषभानु मौंहू की जनि कीजियो.
कहै रतनाकर कहत हम हा हा खाय,
यहां के परपंचन सों रंचन पसीजियो.
आंसू भरि रहैं उदास मुख ह्वै हैं हाय,
ब्रज दुख त्रास कीन तातें सांस लीजियो.
नाम को बताय और जताय ग्राम ऊधौ बस,
स्याम सों हमारी राम राम कहि दीजियो.

समाज : धौंईजित तित तें बिदाई हेतु उद्धव की,

गोपी भरीं आरत सम्हारत न साँसुरी.

कहे रतनाकर मयूर पच्छ कोऊ लिए,

कोऊ गुंज अंजुली उमाहे प्रेम आँसुरी.

भाव भरी कोऊ लिए रुचिर सजाय दही,

कोऊ मही मंजु दबि दलकति पाँसुरी.

पीतपट नंद जसुमति नवनीत दियौ,

कीरति कुमारी सुरवारी दई बाँसुरी.

(रथ चलने की ध्वनि)

समाज : आए लौट लज्जित नवाये नैंन ऊधौ अब,

सब सुख साधन कौ सूधौ सौ जतन लै.

कहे रतनाकर गँवाए गुन गौरव औ,

गरब गढ़ी कौ परिपूरन पतन लै.

आए नैंन नीर पीर कसक कमाए उर,

दीनता अधीनता के भार सौं नतन लै.

प्रेम रस रुचिर विराग तूमड़ी में पूरि,

ज्ञान गूदड़ी में अनुराग सौ रतन लै.

डगमग पग लोचन सजल, लखि ऊधौ यदुनाथ.

उमगि लगायौ हृदय ते, बैठारौ गहि हाथ.

कृष्ण : अरे भैया उद्धव! आऔ सखा, कहा तुम ब्रज है आये. ये तुम्हारी कहा दसा है. भैया यहाँ ते तौ तुम भले चँगे गये है. वहाँ तुम्हें यह कहा है गयौ, तुमतौ बिलकुल बदल गये. का गोपिन कौं जोग कौ उपदेस दै आये?

उद्धव : हाँ मथुराधीस! हम ब्रज जाय के उन ब्रजदेविन सौं प्रेम कौ पाठ पढ़ि आये. वहाँ अपनी ज्ञान योग की मूरि गँवाय आये. गये तौ हुम गुरु बनिबे कूँ पर उलटे उन प्रेममयी ब्रजांगना के चेला बनि आये. वहाँ हमारौ जोग और ज्ञान कौ गरूर गोपिका

के प्रेम के प्रवाह में बहि गयौ.

लैकै पन सूक्ष्म अमोल जो पठायौ आप,

ताकौ मोल तनक तुल्यौन तहाँ सोटी तैं.

कहै रतनाकर पुकारि ठौर ठौर पर,

पौरि वृषभानु की हिरान्यौ मति माठी तैं.

लीजै हेरि आपही न हेरि हम पायौ फेरि,

याही फेरि माहि भर माठी दधि आँठी तैं

ल्याए धूरि पूरि अंग अंगनि तहाँ की जहाँ,

ज्ञान गयौ सहित गुमान गिरि आँटी तैं.

हे गोविन्द! जैसे ही मैंने ब्रजगोपिन सौं जोग की चर्चा चलाई कै उनके नेत्रन सौं प्रेम कौ ऐसौ सागर उमड़्यौ कै मै तौ तुरंत ही वा प्रवाह में आकंठ (डूबने) लग गयौ. तब मैंने वहाँ सौं भाग कें हीं अपने प्राण बचाये. अब वह प्रवाह मथुरा की ओर उमड़ौ चलौ आय रह्यौ है या सौं या तौ आप स्वयं ब्रज जायकै वा प्रवाह कू रोकौ या फिर सौं बड़ के पेड़ पै चढ़ जाओ. या मथुरा में बेगि ही प्रयत्न वैवे वारी है -

ज्यौंही कछु कहन संदेस लग्यौ त्यौंही लख्यौ,

प्रेम पूरि उमगि गरे लौं चढ़्यौ आवै है.

कहै रतनाकर न पाँव टिक पावैं नेकु,

ऐसौ दृग द्वारन सबेग बढ़्यौ आवै है.

मधुपुर राखन कौ बेगि कछु ब्यौंत गढ़ौ,

धाय चढ़ौ वर पै न जो पैगढ़ौ आवै है.

आयौ भज्यौ भूपति भगीरथ लौं हौं तौ नाथ,

साथ लग्यौ सोई पुण्यपाथ चलौ आवै है.

हे ब्रजेश्वर मेरी तौ अब आपसौं एक हीं विनती है -

सुनिय विनय मम स्याम, जाय वृन्दावन रहिये.
परम प्रेम कौ पुंज जहाँ गोपिन संग लहिये.
और संग सब छाँडि के, उन लोगन सुख देउ.
नातरु टूटौ जात है, अबही नेह सनेहु. करोगे फिर कहा..

कृष्ण : भैया उद्धव! मैंने तौ तुम्हें गोपिन कू उपदेस दैवे भेजौ हौ पर तुमतौ लौट के उलटे मोकू ही उपसेद देवे लगे. भैया मैं ब्रजवासीन सौं एक क्षण कू हू दूर नहीं हूं. मैं सरीर ते ही मथुरा हूँ पर मेरे प्राण सदा ब्रज में ही बसें हैं. मो में और उनमें तनिक हू अन्तर नहीं है –

हे सुचित्त मम सखा भले पठये सुधि लावन.
औगुन हमरे आन वहाँ ते लगे दिखावन.
उनमें मो में है सखा छिन भर अन्तर नाहिं.
ज्यौं देख्यौ मो माहि वे, हौं हू उनही माहि.

समाज : गोपी आप दिखाय एक करिकै बनवारी.
ऊधौ भ्रमहि निवारि डारि मुख मोह की जारी.
अपनो रूप विहार को, कीन्हौ बहुरि दुराय.
नंददास पावन भयौ, सो यह लीला गाय.

रामनारायण अग्रवाल
गली [illegible], मथुरा.

– – –